सुसमाचार लोगों की ज़रूरतों को पूरा करता है

राज्य का पूर्ण सुसमाचार - भाग 7

यीशु की पूरी सेवकाई के दौरान, उन्होंने जिन लोगों से भेंट हुई, उनकी ज़रूरतों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया। जब उन्होंने अपने चेलों को अपने नाम पर सेवा करने के लिए भेजा, तो उन्होंने उन्हें भी ऐसा ही करने का निर्देश दिया।

यीशु ने अपनी सेवकाई का केंद्र उन लोगों पर बनाया जो गरीब थे—आत्मिक रूप से गरीब, स्वास्थ्य के लिहाज़ से गरीब, शक्ति के लिहाज़ से गरीब, सामाजिक दर्जे में गरीब, आर्थिक रूप से गरीब।

> **"**कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, **और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"**—मत्ती 11:5

यीशु ने गरीब लोगों पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि गरीब लोगों की ज़रूरतें होती हैं। उन्हें मदद की ज़रूरत है। उन्हें समाधानों की ज़रूरत है। वे यह महसूस करते हैं कि वे सब कुछ खुद नहीं कर सकते।

दूसरी ओर, जिन लोगों के जीवन के हर क्षेत्र में धनी हैं, उनकी कोई ज़रूरत नहीं होती। उन्हें किसी व्यक्ति या किसी चीज़ से मदद की ज़रूरत नहीं होती। इस स्थिति के कारण, वे अक्सर सुसमाचार के संदेश के लिए खुले नहीं होते हैं।

> "तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। *24*तुमसे फिर कहता हूँ कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।'"—मत्ती 19:23-24

इस जीवन में अमीर होना हमेशा वह आशीर्वाद नहीं होता जैसा कि वह प्रतीत हो सकता है। अमीर लोग अक्सर परमेश्वर को अस्वीकार कर देते हैं क्योंकि उन्होंने खुद को यह सोचने के लिए धोखा दिया है कि उन्हें उसकी आवश्यकता नहीं है। उनके हृदय अक्सर सुसमाचार के संदेश के लिए बंद होते हैं।

यही एक कारण है कि यीशु ने अपनी सेवकाई का केंद्र गरीबों पर रखा। गरीब लोग—जिनकी ज़रूरतें होती हैं—आमतौर पर सुसमाचार के संदेश और उसके द्वारा दिए गए समाधानों के लिए अधिक खुले होते हैं क्योंकि उनकी बहुत ज़रूरतें होती हैं, और वे जानते हैं कि वे इन ज़रूरतों को अपने दम पर पूरा नहीं कर सकते।

इसलिए, परमेश्वर ने गरीबों को चुना है और उन्हें सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए अधिक विश्वास देकर उनकी गरीबी की भरपाई की है।

> "हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उस ने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?"—याकूब 2:5

"प्रभु का आत्मा मुझ पर है,
इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार
सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है,
और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों
को छुटकारे का
और अंधों को दृष्टि
पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और
कुचले हुओं को छुड़ाऊँ,
और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार
करूँ।"—लूका 4:18-19

"और उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते–फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं, **और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"**—लूका 7:22

यही कारण है कि यीशु ने अपनी पर्वत पर उपदेश की शुरुआत आत्मा से दीन लोगों पर आशीषें घोषित करके की, क्योंकि वे ही हैं जो सुसमाचार के संदेश के लिए खुले हैं। वे ही लोग होंगे जिन्हें सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करने के आशीषों, समाधानों और पुरस्कारों से सबसे अधिक लाभ होगा।

"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"—मत्ती 5:3

कुछ लोग आर्थिक रूप से गरीब हैं। कुछ लोग स्वास्थ्य के मामले में गरीब हैं। लेकिन जो लोग सबसे अधिक धन्य हैं, वे वे हैं जो आत्मा में गरीब हैं क्योंकि वे सुसमाचार के संदेश को सुनने और ग्रहण करने के लिए अधिक खुले होंगे।

यीशु मसीह का सुसमाचार हमें उद्धार का मार्ग दिखाता है, लेकिन सुसमाचार उससे कहीं, कहीं अधिक है। सुसमाचार में जीवन के हर क्षेत्र में हमारी ज़रूरतों को पूरा करने और हमारे जीवन को पूरी तरह से बदलने - शरीर, आत्मा और मन - की शक्ति है। सुसमाचार में परमेश्वर के राज्य के सभी अनंत आशीर्वाद निहित हैं।

सुसमाचार में हमारे जीवन की हर ज़रूरत को पूरा करने का प्रबंध है—शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से।

"क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। *4*जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं : ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।"—2 पतरस 1:3–4